दिनांक 11.07.74 की अव्यक्त वाणी पर आधारित मुरली कविता

बापदादा को हर कदम में अपना साथी बनाओ
हर हलचल मिटाकर अचल अडोल बन जाओ

साक्षीपन के तख्त पर बच्चों खुद को बिठाओ
अतीन्द्रिय सुख के अनुभव में जीवन बिताओ

अपना हर बोल इतना श्रेष्ठ और मधुर बनाओ
तुममें बाप नजर आए बाप में तुम नजर आओ

हर कदम में अपने बाप को फॉलो करते जाओ
त्याग तपस्या करके बाप का दिल तख्त पाओ

कर्मेन्द्रियों और प्रकृति पर सम्पूर्ण विजय पाओ
विश्व महाराजा बन विश्व राज्य का तख्त पाओ

जब तुम अपने बापदादा सर्वशक्तियाँ पाते हो
बाप के आगे किसलिए तुम अर्जियां लगाते हो

खोला है बाप ने जैसे बच्चों की बुद्धि का ताला
बच्चों तुम भी खोलो औरों की बुद्धि का ताला

व्यर्थ संकल्प और चंचल बुद्धि से होता नुकसान
ज्ञान का सिमरन ही मिटाता इसका नाम निशान

रूहानी दिनचर्या की तुम समय सारणी बनाओ
विश्व कल्याण की जिम्मेदारी दिल से निभाओ

स्वयं के शिक्षक बनकर स्वयं को तुम पढ़ाओ
साक्षी बनकर अपनी पढ़ाई चेक करते जाओ

सर्व सम्बन्धों का रस बच्चों बापदादा से पाओ
इसी विधि से वृत्ति दृष्टि की चंचलता मिटाओ